Title: Regarding agitation by the farmers of uttar Pradesh in support of their demands at Delhi.

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : अध्यक्ष महोदय, यह चिन्ता की बात है कि कई बार माननीय नेताओं चाहे इधर के हों या उधर के हों, ने किसानों की समस्या को लेकर सरकार का ध्यान आकर्षित किया है लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि सरकार ने इसे गंभीरता से नहीं लिया है। आज लाखों की तादाद में वे किसान दिल्ली में इकट्ठे होंगे। हालत यह है कि अभी तक किसानों ने कुछ ही सूबों जैसे आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और पंजाब में आत्मदाह किया था लेकिन आज उत्तर प्रदेश के किसानों ने भी आत्मदाह करने की घोषणा कर दी है। दिल्ली के नजदीक हापुड़ में पांच लाख बोरे कोल्ड स्टोरेज में पड़े हुए हैं। अब उनके मालिकों ने फैसला कर लिया है कि हम आज से बिजली बंद कर देंगे। आलू बर्बाद हो जायेगा जबकि अभी बाजार में नया आलू आ गया है।

हमारा कहना है कि चाहे आलू का किसान हो या किसी भी पैदावार का किसान हो, वे सब बर्बाद हो रहे हैं। इसी तरह सरकार की उदार नीति के चलते 40 हजार करोड़ रुपये केवल सरसों के तेल में विदेशी कम्पनियों ने कमा लिये हैं। आज हमारे किसान को लूटा जा रहा है। यह लोकतंत्र है और लोकतंत्र में हमारी भावनाओं का आदर करने का मतलब देश की भावना का आदर करना है। किसान के बिना आज अर्थव्यवस्था सुधर नहीं सकती। आज कोई भी विदेशी कम्पनी हो, विदेशी कर्जा हो, देश को ताकतवर बनाना हो या उद्योग चलाना हो, बिना किसान की पैदावार के आप कामयाब नहीं हो सकते। आज पूरी अर्थव्यवस्था चौपट हो रही है जबकि हमारे देश की अर्थव्यवस्था खेती पर निर्भर है। यहां 76 फीसदी लोग खेती पर निर्भर करते हैं। जैसा अभी बासुदेव आचार्य जी ने बताया कि अपने यहां 72 फीसदी लोगों के पास अपनी खेती है और चार फीसदी ऐसे लोग हैं जो खेतीहर मजदूर हैं। वे सब आज बेकार हो रहे हैं, बर्बाद हो रहे हैं।

आज देश में मंदी और महंगाई दोनों चल रही हैं। किसान की जो पैदावार है, वह सस्ती है। उसे कोई भी खरीदने वाला नहीं है। दूसरी तरफ किसान को पैदावार के लिए खाद चाहिए जो महंगी भी है। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि एक तरफ यहां किसान को खेती में जो सबसिडी मिलती थी, वह बंद कर दी गई है और दूसरी तरफ धनी देशों ने अपने किसानों को छः गुना सबसिडी देनी शुरू कर दी है। यह बड़ी चिन्ता की बात है। आप कह रहे हैं कि इस पर चर्चा होगी। मेरा कहना है कि इस पर रोजाना चर्चा हो रही है लेकिन सरकार ने इस पर अभी तक गंभीरता से कोई निर्णय नहीं लिया है। ये हमारे देश की अर्थव्यवस्था को ही नहीं बल्कि पूरे देश को बर्बाद कर रहे हैं। आज ऐसा लग रहा है कि कुछ ही समय बाद हिन्दुस्तान का किसान इस तरह की नीतियों के चलते अपनी खेती छोड़ने को मजबूर हो जायेगा। असली बात तो नीतियों के सवाल की है। अभी परसों हमारे भूतपूर्व स्पीकर साहब ने अच्छी बात कही थी कि आज उपभोक्ता भी लूटा जा रहा है और किसान भी लूटा जा रहा है ? आखिर किसान के बारे में आज आपकी क्या नीति है। इस देश को आजाद हुए 53 साल हो गए लेकिन किसानों के बारे में कोई स्पष्ट नीति नहीं है। कारखाने की चीज महंगी होगा ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, फार्मर्स के बारे में रोज चर्चा हो रही है। We are discussing this issue every day.

...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : किसान की पैदावार सस्ती होगी। आखिर कोई तो नीति बनानी पड़ेगी। आप किसान को कब तक बर्बाद करेंगे ? यह सवाल केवल किसानों का ही नहीं बल्कि पूरे देश का है क्योंकि आज देश की पूरी अर्थव्यवस्था किसानों पर निर्भर है। हम चाहते हैं कि सरकार इसको गंभीरता से लेकर किसानों की समस्या को हल करे। अगर किसान आत्मदाह करेगा, तो दुनिया में इससे ज्यादा शर्म की बात हिन्दुस्तान के लिए और कोई नहीं हो सकती। इसलिए संसदीय कार्य मंत्री जी इस पर अभी आश्वासन दें।

मेरा कहना है कि आप नियम 193 पर ज्यादा जोर मत दीजिए। असली बात तो यह है कि आप कुछ काम कीजिए। आज हापुड़, मेरठ में किसानों ने कहा है कि वे तहसील घेरकर आत्मदाह करेंगे।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी अभी नियम 193 पर चर्चा शुरू नहीं हुई है।

...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : मैं कहना चाहता हूं कि अगर किसानों ने आत्मदाह किया तो इस देश के अंदर वह अशांति होगी जिसे आप संभाल नहीं पायेंगे। वह अशांति बेकाबू हो जायेगी। इसलिए हम आपको सावधान करना चाहते हैं कि सरकार इसे गंभीरता से ले और यहां कोई आश्वासन देकर समस्या का समाधान करे, ऐसी हमारी मांग है।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Sir, may I take only one minute?

MR. SPEAKER: If it is to be only one minute, I think, there is no problem.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, many senior Ministers are here. Nearly half-a-million people have assembled today in Delhi, representing the peasants' organisations and farmers' organisations.

They are holding a peaceful rally in *Ram Lila* maidan today. It is going on at the moment. The matter is vitally concerning this country and the economy of this country. This matter is concerned with more than 70 per cent people of this country. Can we not expect the Government to make a response on their own?

We have witnessed the unfortunate angry outbursts of the Agriculture Minister. In his reply to the debate, not a single issue was dealt with by him. Whether one likes it or not, we all witnessed it with great pain and anguish. The basic issues were not answered, but he only blamed the Opposition and he only blamed the WTO. ...(*Interruptions*) Let him come. It is not my fault. Senior Members of the Council of Ministers are present here. ...(*Interruptions*)

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक) : जब मंत्री जी ने जवाब दिया था, उस समय आपने कुछ नहीं बोला।â€¦(व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Therefore, I appeal to the Government as a whole. Senior Ministers are present

here. When people are agitated outside the House, should the Ministers not come forward and give some response on the important issues that are being raised here? It is for the better functioning of the system. ...(*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): Sir, I fully share the concern expressed by Shri Mulayam Singh Yadav and Shri Somnath Chatterjee. Most of the distinguished members of the Cabinet who are sitting here are coming from people's struggle. They have serious experiences of being with the working class and with the peasants. It was a tradition of the House that whenever any grievances are expressed through rallies by the working class or by the farmers, especially the toiling masses, the Government − be it of any political party − and the Opposition respond together to their cause and to express their concerns.

During the course of debate on the adjournment motion initiated by Shrimati Sonia Gandhi, Members of all political parties cutting across party lines have expressed their concerns in the given situation of the economy and they did not try to score political points.

Therefore, I seriously feel − since the peasants from all parts of the country have assembled here together in Delhi − it is the duty of this august House to respond to their concerns and the Government should appropriately respond. Many of the Ministers in the Government have come from the struggle of the people and now are sitting in the Treasury benches.